क्या गाँधी और *हिंद स्वराज* की उनकी कल्पना को उनके लेखन की घड़ी से अलग किया जा सकता है? वे आने वाली आधुनिकता से पहले के क्षण में *हिंद स्वराज* का ढाँचा बनाते हैं। यह एक ऐसा पल है जहाँ समाज और व्यक्ति ने दहलीज पार नहीं की थी। यदि केवल परम्परागत या रूढ़ि परायण समाज की चर्चा होती तो भला *हिंद स्वराज* की ज़रूरत ही क्या थी?

***हिंद स्वराज* में अस्ताचल की ओर बढ़ रही, सीमित बन रही सम्भावनाओं का दर्शन है। इसकी प्रवाहमयता हमें व्यग्र करती है और इसी कारण बार-बार उससे जूझने का न्योता देती है।**

हिंद स्वराज : गोधूलि वेला में परम्परा और आधुनिकता

त्रिदीप सुहृद

गाँधी की रचना *हिंद स्वराज* 1909 में लिखी गयी। 1909 यानी बीसवीं सदी का पहला दशक। *हिंद स्वराज* न तो उन्नीसवीं शताब्दी में लिखा गया, और न ही बीसवीं शताब्दी के अंत में। बीसवीं सदी के अंत में हमने एक बार फिर से *हिंद स्वराज* के महत्त्व और इसकी सम्भावना पर नये सिरे से विचार करना शुरू किया। हम *हिंद स्वराज* का दार्शनिक महत्त्व समझने लगे। इसी के साथ *हिंद स्वराज* भी हमारे समय में, हमारी समकालीनता में आने के लिए तत्पर हुआ। लेकिन शायद हमें इस प्रयास के लिए दार्शनिक धरातल अभी खोजना होगा।

क्या है यह दार्शनिक धरातल? क्या गाँधी और हिंद स्वराज की उनकी कल्पना को उनके लेखन की घड़ी से अलग किया जा सकता है? यही सवाल *हिंद स्वराज* की हमारी पठन प्रक्रिया और मानसिकता का निर्माण करता है। बीसवीं सदी का प्रथम दशक! इस दशक में हिंद स्वराज की नींव में जो दर्शन है, जो विचार-बीज है, उसकी सम्भावना जीवित थी। परम्परा और आधुनिकता के बीच